जनवादी साहित्य की परंपरा और विश्वेश्वर का कथा–साहित्य

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के
कला संकायांतर्गत हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध–रूपरेखा

2015–16

शोध–निर्देशक	प्राचार्य	शोधार्थी
डॉ. (श्रीमती) कृष्णा चटर्जी	डॉ. सुशीलचंद्र तिवारी	परमेश्वर सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)	शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर	शास. वि. या. ता. स्व. स्नात.
शास. वि. या. ता. स्व. स्नात	स्वशासी स्नातकोत्तर महा. दुर्ग (छ.ग.)	महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)		

Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

शोध केंद्र
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध–प्रबंध का शीर्षक :–

जनवादी साहित्य की परंपरा और विश्वेश्वर का कथा–साहित्य

1. भूमिका :–

विश्वेश्वर हिन्दी कथा–साहित्य की साठोत्तरी पीढ़ी के अत्यंत प्रतिभाशाली एवं 'साहसी' कथाकार हैं। उन्होंने फेंटेसी शिल्प को हिन्दी कथा–क्षेत्र में नया रूप दिया एवं नये प्रतिमान गढ़े। घिसी–पिटी सामाजिक मर्यादाओं, सड़ी–गली परंपराओं और कदम–कदम पर व्यक्ति का विकास रोकने वाली वर्जनाओं एवं रूढ़ियों पर निर्मम प्रहार करते हुए विश्वेश्वर ने कथा–साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान निर्धारित किया। विश्वेश्वर जी का जन्म 15 अक्टूबर 1944 को छत्तीसगढ़ के पाटन तहसील के अन्तर्गत 'भरर' नामक गाँव में हुआ। आपकी शिक्षा–दीक्षा दुर्ग में हुई। छात्र जीवन से ही साहित्य के प्रति आपका लगाव रहा। छात्र जीवन में ही आपने अनेक कहानियाँ, उपन्यास एवं नाटक लिखे। छत्तीसगढ़ की माटी में जन्मे साहित्यकार, विचारक व पत्रकार विश्वेश्वर ने अपनी प्रतिभा के बलबूते छत्तीसगढ़ का नाम सम्पूर्ण राष्ट्र में रौशन किया है। प्रचार से दूर रह कर गुमनामी के अंधेरे में अभाव ग्रस्त जीवन जीने वाले विश्वेश्वर जीवन–सागर में उठती–गिरती लहरों की अनेक थपेड़ें खाते हुए आज भी अपने पांव धरती पर मजबूती से जमाए हुए हैं। कठोर जीवन–संघर्ष आज भी उनके जीवन का लक्ष्य हैं। खतरा और आशंका इस बात की है कि आज के माहौल में व्यवसायिक मानसिकता न रखने वाला यह अत्यन्त प्रतिभाशाली साहित्यकार और छत्तीसगढ़ का सशक्त–समर्थ व्यक्तित्व अभाव ग्रस्त जीवन जीते हुए कहीं गुमनामी के अंधेरे में न खो जाय। ऐसे प्रखर व्यक्तित्व को प्रकाश में लाना ही मेरे शोध का उद्‌देश्य है। आपकी रचनाएँ समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर की श्रेष्ठ पत्र–पत्रिकाओं में छपती रही हैं। जैसे सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कहानी, नई कहानियाँ, कादाम्बिनी, ज्ञानोदय इत्यादि। विश्वेश्वर जी की रचनाओं ने हिंदी साहित्याकाश में न केवल अपने नाम का डंका बजवाया बल्कि छत्तीसगढ़ की विशिष्टताओं को राष्ट्रीय पहचान देने की सृजनात्मक पहल की है।

2. प्रस्तावित शोध–कार्य को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण किया जायेगा :–

प्रस्तावना

अध्याय–1–जनवादी साहित्य का अर्थ एवं आरंभ

1.1 कलावादी और जनवादी साहित्य में अंतर
1.2 प्रगतिवाद से जनवाद : ऐतिहासिक संदर्भ
1.3 जनवादी साहित्य के प्रेरणा स्रोत
1.4 जनवादी संघर्ष का साहित्य पर प्रभाव
1.5 जनवादी साहित्य : मूल्य, अवधारणाएँ और मूल्यांकन की समस्याएँ

अध्याय–2–विश्वेश्वर की सृजनशीलता

2.1 व्यक्तित्व

2.2 कृतित्व

2.2.1. कहानियाँ

2.2.2. उपन्यास

2.2.3. नाटक

2.2.4. सम्मान

अध्याय–3–विश्वेश्वर के कथा–साहित्य में जनवाद का विश्लेषण

3.1 कहानी–संग्रह : वैशाख का कोई एक दिन, लाक्षागृह, विशिष्ट कहानियाँ, दूसरी गुलामी

3.2 उपन्यास : मुक्तिबोध के बहाने, प्रतिनायक, ग्रामसेवक, एक नौजवान की मौत, महापात्र, हाथों–हाथ

अध्याय–4–विश्वेश्वर के कथा–साहित्य में चित्रित जनवाद का स्वरूप और वर्गीकरण

4.1 परिवर्तित जीवन–संघर्ष एवं नए संघर्षों की खोज

4.2 आर्थिक अभाव एवं बेरोजगारी का दंश

4.3 पारिवारिक मूल्यों का पतन

4.4 बदलते स्त्री–पुरूष संबंध

4.5 शहरीकरण और विस्थापन

4.6 व्यवस्था का दमनकारी स्वरूप

4.7 मानवीय संबंधों की व्यर्थता और उससे उपजा संघर्ष

4.8 मुक्ति का मार्ग

अध्याय–5–विश्वेश्वर के कथा–साहित्य में व्याप्त जनवाद की परिणतियाँ

5.1 जनवादी चेतना का उद्‌भव,

5.2 सामाजिक परिवर्तन का आधार

5.3 नए समाज की अवधारणा

5.4 सौंदर्य–बोध और कथा–साहित्य

5.5 कथा–साहित्य के विकास में श्रम की भूमिका

5.6 वर्ग एवं कथा–साहित्य

अध्याय–6–जनवादी साहित्य की परंपरा के परिप्रेक्ष्य में विश्वेश्वर के कथा–साहित्य की उपलब्धियाँ

6.1 पूर्ववर्ती एवं प्रचलित कथा–साहित्य के वस्तु व रूप का अतिक्रमण

6.2 यथार्थ एवं जीवनानुभव से बुनी गई फंतासी कथाएँ

6.3 मानवीकरण की नई कथा–भूमि की खोज

उपसंहार

परिशिष्ट

3. **संबंधित क्षेत्र में पहले से हुए कार्य की समीक्षा :–**

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में 'श्री तिलेश्वर प्रसाद टंडन द्वारा विश्वेश्वर जी के उपन्यास 'हाथों–हाथ का विवेचनात्मक अध्ययन' पर लघु शोध–प्रबंध लिखा गया'। इसके अतिरिक्त लेखक के साहित्यिक अवदान पर आज तक शोध–प्रबंध नहीं लिखा गया। विश्वेश्वर जी के सृजनात्मक अवदान को रेखांकित करना ही मेरे शोध का उद्देश्य है।

4. **संबंधित विषय क्षेत्र में पहले से किए गए महत्वपूर्ण कार्य :–**

संबंधित विषय क्षेत्र में पहले से महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुए है। 'नई कहानी नई दृष्टि' नामक पुस्तक में डॉ. इंद्रनाथ मदान द्वारा विश्वेश्वर के रचनात्मक अवदान पर संक्षिप्त समीक्षा की गई हैं।

5. **शोध–कार्य के लिए प्रस्तावित शोध–प्रविधि :–**

प्रस्तावित शोध–कार्य हेतु साहित्य के प्रचलित मानदण्डों के अनुरूप शोध एवं आलोचनात्मक परीक्षण पद्धति अपनाई जाएगी। आवश्यकतानुसार साक्षात्कार एवं समीक्ष कों से चर्चा–परिचर्चा कर समकालीन कथा–परिदृश्य, सामाजिक यथार्थबोध एवं मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थता के साथ–साथ ग्रामीण–जीवन के यथार्थ को रेखांकित कर समीक्षा की जायेगी इसके अतिरिक्त लेखक से साक्षात्कार कर विषय–वस्तु को समझने की पद्धति भी प्रयोग में लाई जाएगी।

6. **प्रस्तावित कार्य का प्रत्याशित निष्कर्ष :–**

प्रस्तावित शोध–कार्य द्वारा जनवादी साहित्य–परंपरा के परिप्रेक्ष्य में विश्वेश्वर के कथा–साहित्य में पूर्ववर्ती एवं प्रचलित कथा–साहित्य के वस्तु एवं रूप के अतिक्रमण को दर्शाना तथा यथार्थ एवं जीवनानुभव से बुनी गई फँतासी कथाएँ एवं मानवीकरण की नई कथा–भूमि की खोज ही मेरे अन्वेषण का मुख्य उद्देश्य होगा।

1. आधार ग्रंथ–सूची :–

1. दूसरी गुलामी, कहानी–संग्रह, अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, 1972
2. लाक्षागृह, कहानी–संग्रह, संभावना प्रकाशन, हापुड़ उत्तरप्रदेश, 1981
3. वैशाख का कोई एक दिन, कहानी–संग्रह, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़, 2007
4. विशिष्ट कहानियाँ, कहानी–संग्रह, शीर्षक प्रकाशन, हापुड़ उत्तरप्रदेश

2.संदर्भ–ग्रंथ–सूचीः–

1. बेचन. आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य और चरित्र विकास, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1965

2. अवस्थी देवीशरण. नई कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1973

3. मदान इंद्रनाथ. नई कहानी, नई दृष्टि, हापुड़ संभावना प्रकाशन, 1978

4. रावत चन्द्रभान, खण्डेलवाल रामकुमार. हिंदी कहानी फिलहाल, राजपाल एण्ड संस नईदिल्ली, 1980

5. राय विवेकी. हिंदी कहानी समीक्षा और संदर्भ, राजीव प्रकाशन दिल्ली, 1985

6. शर्मा संतोष. नयी कहानी की भंगिमा, चिंता प्रकाशन पिलानी राजस्थान, 1986

7. सिंह पुष्पपाल. समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 1986

8. वर्मा धनंजय. आधुनिक हिंदी कहानी, मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग, भोपाल, 1986

9. कुमार प्रेम, कुमार सुरेश. हिंदी कहानी. सार्थक रचनाशीलता, गिरनार प्रकाशन पिलानीगंज महेसाना, उत्तर गुजरात, 1987

10. मदान इंद्रनाथ. हिंदी कहानी पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992

11. उपाध्याय रमेश. जनवादी कहानी, पृष्ठभूमि से पुनर्विचार तक, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली, 2000

12. श्रीवास्तव परमानंद. हिंदी कहानी की रचना प्रक्रिया, लोक भारती प्रकाशन, 2012

3.पत्र–पत्रिकाएँ:–

1. सारिका, फरवरी 1969
2. धर्मयुग, 1972
3. कहानी, 1972
4. नई कहानियाँ, 1972
5. राष्ट्रवाणी, 1972
6. आजकल, 1971–72
7. नागफनी, 1972
8. गल्पभारती, साहित्यिक पत्रिका, कोलकाता, 1965–66

शोध–निर्देशक	प्राचार्य	शोधार्थी
डॉ. (श्रीमती) कृष्णा चटर्जी	डॉ. सुशीलचंद्र तिवारी	परमेश्वर सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)	शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर	शास. वि. या. ता. स्व. स्नात.
शास. वि. या. ता. स्व. स्नात	स्वशासी स्नातकोत्तर महा. दुर्ग (छ.ग.)	महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)		

Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

शोध केंद्र

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)